अलख

अंक 05 वर्ष 2016 मई—2016

विषय सूची

01. सम्पादकीय—चालीस वर्ष और..... 01
02. प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरू देव स्वामी अलखानंद जी महाराज 02
03. अध्यात्म का प्राथमिक पाठ 08
04. ਨਾਮ ਬਿਨ ਭਾਵ ਕਰਮ ਨ ਛੂਟੈ 10
05. योग और व्यायाम में अन्तर 13
06. अनुभव वचन भंड़ार 13
07. Dhammapada 14
08. सत्संग सूचनाएं 16
09. अलख होम्यो क्लीनिक 16

//////////////////////////////

अगला सत्संग

द्वितिय रविवार	अंतिम रविवार
11-जून-2016	25-जून-2016

//////////////////////////////

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय
सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर
(होशियारपुर) पिन-146105
website:-aavpashram.com
Email- aavpmahilpur@gmail.com

AP-89

चालीस वर्ष और चार आने

सम्पादकीय....

स्वामी रामतीर्थ के जीवन की एक कथा है। लाहौर छोड़ने के पश्चात् मस्ती की दशा में ऋषिकेश से आगे गंगा के किनारे घूम रहे थे। एक दिन एक योगी उन्हें मिला। स्वामी जी ने उनसे पूछा, ''बाबा, कितने वर्ष से आप सन्यासी हैं ?''

योगी ने कहा,''कोई चालीस वर्ष हो गये।''

स्वामी रामतीर्थ बोले- ''इतने वर्षों में आपने क्या कुछ प्राप्त किया है ?''

योगी ने बड़े अभिमान से कहा-''इस गंगा को देखते हो ? मैं चाहूं तो इसके पानी पर उसी प्रकार चलकर दूसरी ओर जा सकता हूं, जैसे कोई शुष्क भूमी पर चलता है।

स्वामी रामतीर्थ ने कहा, ''उस पार से वापस भी आ सकते हैं आप ?

योगी ने कहा- ''हां, वापस भी आ सकता हूँ।''

स्वामी रामतीर्थ बोले-''इसके अतिरिक्त कुछ और ?''

योगी ने कहा- ''यह क्या छोटी सी बात है ?''

स्वामी जी ने हंसते हुए कहा-''बहुत छोटी सी बात बाबा! चालीस वर्ष आपने खो दिये। नदी में नौका भी चलती है। दो आने उधर जाने के लगते हैं, दो आने इधर आने के। चालीस वर्ष में आपने वह प्राप्त किया, जो केवल चार आने खर्च करके किसी भी व्यक्ति को मिल सकता है। तुम अमृत के सागर में गये अवश्य, किन्तु वहां से मोती के स्थान पर कंकर समेट लाये। ये सबकी सब सिद्धियां आत्मोन्नयन के मार्ग में बाधाएं हैं, आत्मोद्घाटन के रास्ते में रूकावट हैं। केवल सांसारिक सफलता है यह, आत्मा को प्राप्त करने का मार्ग नहीं है।''

प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरू देव स्वामी श्री अलखानंद जी महाराज

श्री गुरू पद नख मणि गण ज्योति। सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।।
दलन मोह तम सो सुप्रकासू। बड़े भाग्य उर आवहिं जासू।।

मोती उपजे सीप में, सीप समुंद्र मांहि।
वस्तु धनी से पाईए, नाल खाल से नांहि।।

सन्त सदगुरू के वचन बहुत अनमोल होते हैं, पर होते बहुत ही गहन है, यह संसारी जीव उसे शीघ्र समझ नही पाते, यदि सत्संग में आता रहे तो धीरे-धीरे वह वचन समझ में आने लगते हैं, सन्त पुरूष बड़े दयालू होते हैं, वह जीव के कल्याण के कारण कई दुख सहते हैं। कहते हैं कि एक साधू था वह भिक्षा मांगने जाता तो एक घर से उसे भिक्षा नहीं मिलती थी, वह बार-बार उस घर में जाता पर उसे मालिक भिक्षा न देता उसने जाना नहीं छोड़ा, होते-होते एक दिन मालिक कहता है कि आज तुझे बताता हूं, तूं बार-बार आता है, हमें मना करना पड़ता है, इसका हमें रोज कष्ट उठाना पड़ता है। जब हम तुझे भिक्षा देते ही नहीं तो तूं क्यों आता है तो उस दिन उसने एक मुट्ठी में राख भर कर उस की झोली में डाल दी व कहने लगा कि अब बताऊंगा तू कैसे फिर मांगने आएगा! साधू नाच उठा, मिल गया, मिल गया आज तो मिल गया, मकान मालिक उसे हैरानी से देखने लगा, उसने तो सोचा था कि आज तो साधू गाली देगा, क्रोधित हो उठेगा पर वह तो हंस रहा है तो उसने कहा रे मूर्ख क्या मिल गया देख तो ले कि झोले में क्या है ? राख डाली है तेरे झोले में तो साधू ने कहा कोई बात नहीं आज राख डाली है तो कल को अन्न भी डालेगा। कुछ डालना तो आ गया। इस कारण से जो सत्संग में आते हैं पूर्ण वचन होते तो गहन हैं पर ध्यान से बार-बार सत्संग में आने से समझ आने लगते हैं। महांपुरूषों का संसार में आना ही इसीलिए हुआ है कि दुखी जीव को इन्द्रियों के बन्धन में बंधा हुआ दुखी है परम आनन्द से भर दें, परमात्म से मिलने का सच्चा रास्ता बता दें। वह अपने घट का ताला खोल ले। उनका तो एक ही सन्देश है क्या ? कि पहले जानो बाद में मानो।

सच्ची यात्रा वहां से शुरू होती है, जब सदगुरू घट में ही परमात्मा के, जीते जी दर्शन करवा दे और उस रंग में रंग दे जो रंग लगने के बाद फिर कभी न उतरे बल्कि और चढ़ता ही जाए। यह ज्ञान गुप्त है जो शिष्य इस ज्ञान को मनमुख होकर दूसरों को बतलाते हैं, उनका वही हाल होगा, कि किसी से पारस मणि गहरे समुन्द्र में गिर गई फिर हाथ नहीं लगी। मन मुख हुआ, गुरूमुखता काटी तो दोबारा वह घट में जोत(परम प्रकाश) के दर्शन नहीं कर सकता। यह तो सदगुरू कृपा है, जिससे जीव परम आनन्द को पाता है, प्रकाश(जोत) के दर्शन करता है, आवश्यकता इस बात की रहती है कि किसी को भी ज्ञान के बारे में नहीं कहना चाहिए इसको तो श्री महाराज जी ही जना सकते हैं।

हर घट में अमृत का झरना बह रहा है, पीना तो अमृत है, आनन्द तो लेना है कैसा आनन्द जिस परम आनन्द के बाद सब संसारी सुख, आनन्द फीके पड़ जाएं, अमर होना है, संसार के इस भवसागर से पार होना है, यह तब ही हो सकता है, जब पूर्ण सदगुरू मिल जाए, जिस को पूर्ण गुरू

मिल गये उसके लिए प्रमाण है

सब वन तुलसी भ्ये, सब पर्वत सालगराम।
सब नदियां गंगा भईं, जब मन प्रकटे राम।।

सब वन तुलसी हो गये, तुलसी की पूजा करते हो न? मूर्ति की पूजा करते हो न? सब पर्वत सालगराम हो गये। सब नदियां गंगा बन गई, गंगा यमुना की क्या पूजा करेगा, सब नदियां गंगा बन जाती हैं, जब सदगुरू कृपा से घट में राम प्रकट हो जाते हैं, जो घट-घट में रम रहे हैं, पहले से ही हैं, पर सदगुरू कृपा से प्रकटे। आग तो लकड़ी में है पर बिना युक्ति से प्रकट नहीं होती। बाहर के सभी तीर्थ, सभी मूर्त, सभी पानी, सभी ग्रन्थ, क्या पूजेगा, वह तो सदगुरू कृपा से एक हो गये, जब पूर्ण ज्ञान मिल गया कहते हैं न:—

सब घट में हरि यूं बसें, सन्तन कियो पुकार।
कहो नानक ताहिं भज मना,
तो भव निधि उतरो पार।।

गाता है न:—

सब घट मेरो साईयां, सूनी सेज़ न कोय।
बलिहारी वां घट के, जां घट प्रगट होय।।

प्रभु, हरि तो प्रकट होता है, यह सन्तों के वचन हैं, पर सदगुरू कृपा से, जब प्रकट हो जाए तो आनन्द ही आनन्द है, चारों तरफ से फिर सारा विश्व अपना लगता है।

जहां अपना वहां अपना,
ज़मीन अपनी जहां अपना।
दूई का पर्दा उठाया गुरूदेव ने,
तो सारा ही ज़हां अपना।।

अगर कोई छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठ गया शाश्वत्त शान्ति चाहिए, परम शान्ति चाहिए, यदि कोई ऐसा चाहता है तो उसकी झोली भर ही जाती है। आनन्द में वह भी विभोर हो जाता है। अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरूष, बच्चा हो या बूढ़ा हो, पढ़ा लिखा हो या अनपढ़, अगर ठीक से चित्त दे देवे फिर तो हृदय प्रमात्मा के रंग में रंग जाता है। खुल कर गुरू आज्ञा में, सेवा में उतरे तो जो पूरा चित्त नहीं देता बाहर भी देखता है कोई और भी रस चाहता है तो उसकी बात अलग, वह अपना समय बर्बाद कर रहा है। कहते हैं न जल में जल जाए खटाना, पानी में पानी मिल गया, मिलता ही है चाहे बादल बनकर उड़ जाये, पर बरसात में वह जमीन पर गिरता है, इकट्ठा हो कर नदी में जा पहुंचा नदी से दरिया में और दरिया से समुंद्र में जा पहुंचा। समुन्द्र में जाकर पानी चैन लेता है, इसी प्रकार हर अंशी अपने अंश को खोज रहा है, तेरी कठिनाई क्या? चाहता है आनन्द चैन, पर खोज रहा है भगवान की बनाई हुई सृष्टि में, भगवान के बनाये हुए पदार्थों में, जो पदार्थ बनाए वह माया से बनाए और जो माया से बना है वह सब नाश होगा, तो उसमें चैन कहां, आनन्द तो परम पिता प्रमात्मा के मिलाप में ही है। परन्तु प्राणी संसारी पदार्थों में ही भरमता रहता है गुरवाणी में भी इस प्रकार कहा है।

अनेक जौन भरमे भरमिया,
हस्त की कीट पतंग होए जीआ।

कभी कीड़ा होकर पतंगा होकर कभी हाथी होकर इस सृष्टि में भरमता रहता है, जो संसारी पदार्थों में चित्त देता है, जैसे स्वांगी स्वांग रचता है, इसी प्रकार से तू भी हे प्राणी स्वांगी का काम कह रहा है। माया तुमसे स्वांगी का काम ले रही है। माया पति भगवान से मिलना चाहता है तो हिम्मत कर, सबसे पहली बात सब्र संतोष करके कहा है। जो तेरे भाग्य का है वह कहीं जाएगा नहीं डर मत, प्रभु को चाह शरीर से कारोबार तो किये जा, लेकिन बहुत चिन्ता मत कर, जो कष्ट है वह हल्का होकर

से फिर लगी तो दूसरी तरफ गई, गुल्ली एक है पर डंडे सब ने हाथ में लिए हैं। गुल्ली भटक रही है कभी इधर तो कभी उधर, अगर इस गुल्ली की भांति भटकना नहीं चाहता तो लौट कर अपने भीतर आ, भीतर आने का अर्थ है, साध संग कर । कहा है न:—

कबहूं साध संग के पावै।
उस स्थान से बौहड़ न आवै।।

झगड़ा खत्म हो गया।

राड़ मिटी आत्म दरशाना,
प्रकटे ज्ञान जोत तब पाना।
पूरे गुरू का सुन उपदेश।
पारब्रह्म निकट कर पेख।।

कहते हैं:—

ज्यों जल में जल जाए खटाना।
त्यों ज्योति संग जोत समाना।।
मिट गए गबन पाये विश्राम।
नानक प्रभ के सद कुर्बान।।

यदि प्रमात्मा को मिलना चाहता है तो क्या सच्ची कुबार्नी देने को तैयार है यदि नहीं तो मिलना मिलाना कुछ नहीं बाहर भटका खाएगा,एक प्रमात्मा चाहिए, इस के लिए तैयारी कर यदि ईश्वर एक है तो उसका नाम भी एक है पांच, सात या द्वादश नहीं। सच्चा स्वरूप तेरे भीतर है, किसी ने उसे ब्रह्म कहा किसी ने भर्गो कहा, किसी ने सच्ची जोत कहा, किसी ने तेज कहा, किसी ने स्वयं प्रकाश कहा, किसी ने चाँदना किसी ने नूरे इलाही कहा, यह समय-समय पर लोगों को समझाने के लिए कहा, पर कहने से कुछ हो नहीं गया जो तत्ववेत्ता, पूर्ण महांपुरूष की शरण में गया उसे ही दिखाया, उसकी जोत जगाई, फिर जो ध्यान थोड़ा बहुत भोगना तो पड़ेगा ही, होने दे जो कुछ होता है पर तू सब्र सन्तोष कर, सब मांगे हटा कर एक इच्छा प्रभु की कर। मांग ही जीवन में नीच है। मांग को हटा देने से बाकी क्या रह जाता है, मांग (इच्छा) अपूर्ति ही तो दुखों का घर है।

यदि एक प्रमात्मा को चाहे, एक प्रमात्मा की ही भीतर तड़प जगाए तो फिर कारण बनता है सन्त पुरुष मिलते हैं सत्संग समझ में आता है, घट का ताला खुलता है। सब शास्त्र समझ में आते हैं। आना-जाना, जीना-मरना मिट जाता है। विश्राम हो गया, जोत में मिल गया। जो भरमता था गुल्ली-डंडे की भांति, डंडे का टोहना लगा उधर गई, उधर

में उतर गया गुरू मुख होकर रहा। गुरूमुख का अर्थ गुरू आज्ञा में रहा, गुरू आज्ञा नहीं उलांघी। गुरू के वचनों को शिरोधार्य करके मानता रहा, गुरू आज्ञा के किले में रह गया वह भवसागर से पार हो गया।

कहते हैं कि एक बार राजा गोपी चन्द की माता ने गोपी चन्द को कहा तूं अपने भले की सोच, मनुष्य का शरीर कंचन जैसी काया तुझे मिली है एक समय ऐसी काया तेरे पिता की भी थी, मिट्टी में मिल गई, ऊपर गऊएं घास चर रही हैं तूं अपना भला कर। एक बार राजा गोपीचन्द नीचे स्नान कर रहे थे, रानियां स्नान करवा रही थीं चौबारे पर खड़ी माता रोने लगी, जब माता रो रही थी तो आंख का गर्म आंसू गोपी चन्द की पीठ पर पड़ा, गोपीचन्द ने ऊपर देखा कि मां क्यों रो रही है, जल्दी ही रानियों से दामन छुड़ाया ऊपर गया व पूछा माँ जल्दी बता तुझे क्या कष्ट है, तुझे किसने सताया है, मैं दो मिन्ट में उसके प्राण जुदा कर देता हूं, जल्दी बता तुझे क्या दुख है। मां कहती मुझे किसी ने नहीं सताया फिर तूं क्यों रो रही है ? राजा गोपी चन्द ने पूछा, राजा की माँ होकर रोएगी तो दुनियां की माताएं क्या करेंगी। तूं क्यों नहीं बताती। मैं अब और कुछ नहीं करूंगा पहले मुझे बता। माता ने कहा बेटा तेरे दुख दूर करने का नहीं। तो राजा गोपी चन्द ने कहा, ''माता यदि मैं राजा होकर दुख दूर नहीं कर सकता तो दुनियां में और कौन दुख दूर कर सकता है।'' माता ने कहा, बेटा तुम नहा कर कपड़े पहनो मेरा दुख दूर होने का भी नहीं। गोपी चन्द ने जिद्द ठान ली पूछ कर रहूंगा जब हृदय से दुख जानना चाहा तो माता ने कहा, ''बेटा मैं इस बात से चिन्तित हूं, दुखीं हूं तेरी कंचन जैसी काया है, कभी यह मिट्टी में मिल जाएगी।''

आये हैं सो जायेंगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बांधे जात जंजीर।।

गोपी चन्द ने कहा माता कहने का तात्पर्य क्या है ? मां ने कहा तेरी यह काया बेकार जा रही है तब बेटे ने पूछा, ''मां मुझे क्या करना चाहिए।'' मां ने कहा, ''अब जड़ और चेतन की गांठ खोल इस काया से यह लाभ उठा।'' राजा गोपी चन्द ने कहा मेरी सात रानियां हैं चौदह कुंबारी लड़कियां बैठी हैं, इनका पालन पोषण विवाह कौन करेगा तो माता ने कहा, ''वह अपना भाग्य साथ लेकर आई हैं, बेटा। यह ही तो तेरी भूल है। पत्नियां चौरासी में भी होंगी, मकान चौरासी में भी होंगे।''

कीकर के साथ लगा बिजड़े का घर देखा होगा। कैसे एक-एक तिनखा जोड़ कर घर बना रखा होता है। बारिश, आंधी, तूफान का भी असर नहीं होता, घर तो चौरासी में भी बहुत सुन्दर मिल जाएंगे। कोई ऐसा भोग नहीं जो चौरासी में न होगा।

पति-पत्नी चौरासी में भी होंगे, सूअर के दर्जनों, मुर्गी के बीस-बीस बच्चे होते हैं, सब भोग तो चौरासी में मिल जाऐंगे, परन्तु जड़ चेतन की गांठ, सत्त असत्त का निर्णय, प्रभु का साक्षातकार बिना मनुष्य जन्म के और किसी योनि में होने का नहीं। तूं जड़ चेतन की गांठ खोल, तू परम प्रभु से मिल, तू अपने घट में उतर, तैयार करते-करते बेटे को परमार्थ में उतार ही दिया। गोपी चन्द परमार्थ में उतरने को तैयार हो गया।

श्री गुरू महाराज जी की शरण में जाने के बाद एक बार गोपी चन्द अपनी माता के पास दर्शनों के लिए आया, माता ने कहा बेटा मेरी तीन शिक्षाएं याद रखना। पहली यह कि चौबारे पर चढ़ कर सोना नीचे मत सोना, दूसरी स्वादिष्ट भोजन खाना ऐसा वैसा भोजन मत खाना, तीसरी किले के अन्दर रहना बाहर मत जाना। गोपी चन्द ने कहा माता आप की आज्ञा तो मानूं, परन्तु राजा था किले के बाहर जाना पड़ता पर चलो मैं न जाता अब मैं वहां किले कहां से लाऊंगा, यह तो होने का नहीं, फिर तुम कहती हो स्वदिष्ट भोजन खाना, वहां तो कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वो भी मना। वहां तो यह रहता है। भला वहाँ स्वादिष्ट भोजन कहां से लाऊंगा, माता आप की यह आज्ञा कैसे पालन करूंगा राजा था तो आपने पहले कभी ऐसी आज्ञा दी नहीं। तीसरा आपने कहा चौबारे पर चढ़कर सोना नीचे मत सोना। कभी पेड़ के नीचे सोना पड़ता है, कभी चौबारे भी हो सकते हैं, परन्तु रोज कैसे ? कभी खोह में भी उतरना पड़ेगा।

माता ने कहा बेटा अब तुम ठीक से आज्ञा पालन कर सकोगे क्या ? इसको ध्यान से सुनो और समझो, जब भी कहीं सोएगा तो सुरत बिरत चित्त संभाल कर ऊंचे सुन्न शिखर पर चढ़ा कर सोना। अब यह संसारी लोग क्या जाने, सुन्न शिखर पूरा गुरू मिला ही नहीं , गुरू ने दिये तंत्र-मंत्र वह सुन्न शिखर क्या समझेगा या गुरू मिला ही नहीं, गुरू बनाने की हिम्मत ही नहीं की पर शायद गुरू बनाने की हिम्मत कर लेवे, सत-असत को निर्णय करके जान भी सकता है पर जिसने गुरू बना लिया और ज्ञान न हुआ, वह तो बेचारा गहरे कुएं में उतर गया है, उसे अब सम में आना बहुत मुश्किल है, शास्त्र कहते हैं।

गुरू नाम है ज्ञान का शिष्य सीख ले सोय।
आत्म ज्ञान के बिना गुरू और शिष्य न होय।।

आत्म ज्ञान तो हुआ नहीं, मान बैठा है, कि हमने गुरू बना लिए है कहते हैं न।

गुरू किया है देह का, सदगुरू चीन्हा नाहिं।
लख चौरासी जून में, फिर-फिर भरमे जाहिं।।

जब माता ने कहा बेटा गोपी चन्द जब भी सोना सुरत को ऊंचे शिखर पर यानि सुन्न शिखर में चढ़ा कर निद्रा आए तो सोना ऐसे मत सो जाना, वो ही सच्चा चौबारा है, अगर कहीं बाढ़ आ गई, आग लग गई कई कुछ और हो गया मौत आ भी जाए तो वहां काल नहीं पहुंच सकता माया अपने घेरे में नहीं ले सकती इसीलिए कहा कि चौबारे पर यानि सुन्न शिखर पर चढ़ कर सोना जैसे सन्त कबीर साहिब जी फरमाते हैं।

जगने से सोना भला, जो कोई जाने सोय।
अन्तर लौ लागी रहे, सहजे सुमिरण होय।।

जगने से सोना और भी अच्छा है पर सोने पर मन्त्र-तन्त्र नहीं होते सब छूट जाते हैं। यह पाँच, सात या द्वादश नाम सब छूट जाएंगे। निरन्तर सुमिरण का पता ही नहीं क्या है ? अखण्ड नाम का पता ही नहीं क्या है ? खैर चौबारे पर चढ़ कर सोना यह बात तो माता जी समझ में आ गई, **गोपी चन्द ने**

ਕੀਮ, ਅਕਲ ਤੁਸਾਡੀ ਜਾਈ ਏ ॥

कहा पर स्वादिष्ट भोजन कहां से लाऊंगा। माता ने कहा बेटा, प्रभु को, गुरू महाराज जी को भोग लगा कर खाना, कोई पदार्थ बिना प्रभु को, गुरू महाराज को भोग लगाए मत खाना। यही स्वादिष्ट भोजन है, चाहे नमक कम हो या ज्यादा कोई बहाना नहीं, आनन्द पूर्वक प्रेम पूर्वक खाना, यही स्वादिष्ट भोजन है, नहीं तो जितने भी पदार्थ अच्छे से अच्छे खाएगा जिब्हा कहेगी और-और और अच्छा, और मीठा, और स्वादिष्ट, यह तो खा लिया उसमें क्या है बस यह ही खोजता फिरेगा, जिससे कामनाएं बढ़ेंगी, बाहर मुखी होगा। माता यह बात तो समझ में आ गई पर अब यह बताओ कि गुरू दरबार में, जंगल में किला कहां से लाऊंगा। माता ने बताया कि गुरू आज्ञा में रहना, गुरूआज्ञा मे रहना ही किले के अन्दर रहना है, चाहे घर में रह रहा है, विदेश में रह रहा है तो वहां भी किले में ही रह रहा है। कहते हैं न:—

जो गुरू बसें बनारसी, शिष्य सागर के तीर।
पल्क-पल्क सुध लेत हैं जो गुण होय शरीर।।

जो आज्ञाकारी है वो दूर रह कर भी निकट है, जो आज्ञा नहीं मानता, वह निकट होकर भी दूर है। **किले के अन्दर रहना, चौबारे पर चढ़ कर सोना, स्वादिष्ट भोजन खाना, और जब यह तीन वचन माता ने गोपी चन्द को कहे तो राजा गोपी ने यह बात गांठ बांध ली।**

लाभ उठाने वाले उठाए जा रहे हैं। आनन्द लूटने वाले आनन्द ले रहे हैं, जानने वाले जान रहे हैं, उनकी जिब्हा चर्चा करती है तो हरि चर्चा करती है, कलह की नहीं, बात बखेड़े की नहीं, तेरे मेरे की नहीं, चर्चा करते हैं तो अमृत पीने की, उस सच्चे अमृत की जिस का झरना रात-दिन तेरे अन्दर बह रहा है, उसको पीने की चर्चा करते हैं। तेरे अन्दर जोती जगमगा रही है, तेरे अन्दर अमृत का झरना बह रहा है, तेरे अन्दर कीर्तन हो रहा है, बाजे बज रहे हैं उसे तूं सुन, देख, अमृत पी, वह तब ही हो सकता है जो अपने कल्याण की सोचे अपने आपे में (भीतर) उतरे उस परम कल्याण को खोजो, जानो, पाओ। कहते हैं न:—

आप जपै औरां नाम जपावै।
नानक निश्चय मुक्ति पावै।।

गीता अध्याय 18 श्लोक 66-67 में भगवान श्री कृष्ण जी फरमाते हैं कि जो मेरी भक्ति करता है वह मुझे प्रिय है और जो मेरी भक्ति का प्रचार मेरे भक्तों में करता है वह मुझे प्राणों के समान प्रिय है। इस नाते सन्देश दे रहे हैं। हमारा कहना तो एक ही है।

''जानो जोत न पूछो जाती''

जब तुम इस को पूछने वाले बन गये, जानने को तैयार हो गये, दिव्य प्रकाश को अपने घट में देखने को तैयार हो गये, न कि रटन को। कहते है:—

जानता बूझा नहीं बूझ किया नहीं गौन।
अन्धे को अन्धा मिले राह बताए कौन।।

हम तो वो वचन कहते हैं जो करते हैं, साक्षात करते हैं, रटते नहीं, आप के भले की बात है, परम कल्याण की बात है। प्रमात्मा को जानो, देखो, सुनो और अपने घट में अमृत को पीयो, इसी में परम कल्याण है।

तत् सत् हरि ओम्

अध्यात्म का प्राथमिक पाठ

बालक नरेन्द्र को अपने बचपन में एक खेल बड़ा ही प्रिय था। वह अपने साथियों को लेकर पास के बगीचे में चला जाया करता और घने पत्तों वाले आम के वृक्ष की एक मोटी डाली पर औंधा लटक जाता। साथी नीचे खड़े-खड़े ढंग के खेल खेला करते। बगीचे का माली डरा कि कहीं नरेन्द्र उस पेड़ पर से गिर न जाय और हाथ पांव तौड न बैठे। सो उसने सब बच्चों को इकट्ठा कर कहा—''देखो, तुम उस पेड़ के नीचे मत खेला करो। वहां एक ब्रह्म राक्षस रहता है। यदि कभी वह नाराज़ हो गया तो तुम सब लोगों को खा जायेगा।''

''ब्रह्म राक्षस क्या चीज़ होती है बाबा'' नरेन्द्र ने जिज्ञासा वश उससे पूछा।

''जो लोग किसी दुर्घटना में मारे जाते हैं, वे असमय में मरने के कारण भूत बन जाते हैं। असमय में मृत्यु होने से उनकी आत्मा इधर उधर भटकती रहती है और लोगों को परेशान किया करती है।''—माली ने कहा।

''तो उस पेड़ के नीचे कौन मारा गया था और कब किसने उसकी हत्या की थी?''

''यह तो मुझे नहीं पता बेटा।''

''तो फिर तुम्हें कैसे पता है कि वहां ब्रह्म राक्षस रहता है।''

''लोग कहते हैं।'' माली ने अपना पिण्ड छुड़ाना चाहा।

''लोग तो कहते हैं, परन्तु तुमने कभी उसे देखा है?'' नरेन्द्र एक के बाद एक प्रश्न किये जा रहा था। इन प्रश्नों को सुनकर माली घबरा उठा, क्योंकि वह एक प्रश्न का जवाब नहीं दे पाता था कि दूसरा प्रश्न तैयार मिलता। सो घबरा कर बह बोला—''बेटा नरेन्द्र! तुमसे बातों में तो भगवान ही जीतें। मैं तो केवल इतना कहे देता हूं कि तुम उस पेड़ के नीचे मत खेला करो। कल को कुछ हो गया, ब्रह्म राक्षस ने तुम्हें कुछ कर दिया तो मैं जिम्मेदार नहीं हूं।''

''अच्छा बाबा! अच्छा! नहीं खेलेंगे। इतना नाराज़ क्यों होते हो।'' नरेन्द्र ने कहा और अपने साथियों के साथ वहां से भाग गया।

उसी दिन शाम को नरेन्द्र घर से गायब हो गया। पहले तो परिवार वालों ने सोचा कि यहीं कहीं खेल रहा होगा, परन्तु जब बहुत देर हो गयी तो चिन्ता हुई। बच्चा बड़ा शरारती है, कहीं कोई दुर्घटना न हो गयी हो—यह भय सबको सताने लगा। खोज-बीन हुई। नरेन्द्र को मित्रों के घर तलाश किया गया। बाल सखा तो सब चुपचाप सो गये थे। उन्हें उठा उठाकर पूछा गया कि नरेन्द्र को कहीं देखा था। सभी ने एक ही उत्तर दिया कि नहीं कहीं नहीं। उन बाल सखाओं के अभिभावक भी चिन्तित हो उठे, क्योंकि चंचल और शरारती होने के कारण नरेन्द्र उन्हें भी अपने बच्चों के समान प्रिय था। इसलिए उनकी भी नींद जाती रही और वे भी खोजबीन में लग गये। नरेन्द्र के स्वभाव से परिचित किसी वृद्ध व्यक्ति ने पूछा, ''आज नरेन्द्र को किसी ने कोई काम करने से रोका था?''

''नहीं तो। और रोकने से मानता भी कहां है?''—नरेन्द्र के किसी निकट सम्बन्धी ने कहा।

लड़कों से पूछा गया तो उक्त घटना का पता चल गया और सभी उसी आम के पेड़ तले जा पहुंचे, जिसमें कि माली ने ब्रह्म राक्षस का निवास बताया और आवाज़ लगाई—नरेन्द्र! ओ नरेन्द्र!

''मैं यहां हूँ बापू''— ऊपर से नरेन्द्र की आवाज़ आई।

''नीचे उतरो बेटा। सब लोग कैसे परेशान हो रहे हैं।'' और नरेन्द्र जब नीचे उतरा तो पूछा कि वहां क्या कर रहे थे? नरेन्द्र ने बताया—''ब्रह्म राक्षस की प्रतीक्षा। मैं उससे मिलना चाहता हूं।''

''चलो भाई, घर चलकर सोओ। यहां कोई राक्षस-वाक्षस नहीं रहता। माली ने तुमसे झूठ बोला था।'' और नरेन्द्र को घर ले जाया गया। सत्य को जानने के लिए निर्भीक जिज्ञासु यही नरेन्द्र आगे चलकर स्वामी विवेकानंद के नाम से विश्वविख्यात हुआ, जिसने सब धर्मों का तत्व निचोड़ एक वाक्य के रूप में कहा—''निर्भीकता और साहसिकता''।

यह कहानी मात्र मनोरंजन हेतु नहीं अपितु यह समझने हेतु है कि वास्तविकता की खोज निर्भीकता से ही संभव है जीवन के परम सत्य को जिसने भी खोजा उसने इसी माध्यम से खोजा। निर्भीक—निडर व्यक्ति ही परमात्मा को भी उपल्बध होने का अधिकारी है।

जऊ तौ प्रेम खेलन का चाओ।
सिर धर तली गली हमारी आओ।।
इत मार्ग पैर धरीजै। सिर दीजै काण न कीजै।।

जहां-जहां भी सदगुरूओं—पूर्ण संतों ने सिर देने की बात कही वहां यही अर्थ है कि तुम इस हद तक निर्भीक होकर सदगुरू की शरण आना कि यदि परमात्मा में उतरने के लिए सिर भी देना पड़े तो दे देंगे, तभी परमात्मा को उपलब्ध हुआ जा सकता है। विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि रमण इत्यादि सब महांपुरूष उस निर्भीकता मिसाल हैं। जिन्होंने परमात्मा प्राप्ति हेतु जीवन की भी परवाह न करी।

जब भी कोई सत्य को प्रविष्ट होने को तत्पर हुआ तब उसका पहला सामना उसके अपने अस्तित्व के भय से हुआ, यह भय किसी पदार्थ का नहीं अपितु अपने विचारों का था जो जीव ने अंत: करण में संभाल कर रखे हैं। अंतर्मुख होने को तैयार व्यक्ति जब इन विचारों की दुनियां में उतरता है तो घबराकर ही लौट आता है।

यही भय उसे न सेवा में उतरने देता है न सत्संग में। वहां भी अपने अहंकार पर चोट पड़ने का भय उसे अंतर्मुख नहीं होने देता। कहीं असफलता का भय तो कहीं कुछ खो देने का भय। यही भय रूपी ग्राह सदा जीव का पीछा करता है एवं उसे कभी जीवन की परम उच्च अवस्था को प्राप्त नहीं होने देता।

भय नाशं दुर्मति हरं। कलि में हरि को नाम।।

यह है निर्भीयता का सोपान। इस कलियुग में भय को नाश करने वाला व दुखों को दूर करने वाला एक हरि का सच्चा नाम है। जो भी दुनियावी भय किसी न किसी रूप में बड़े प्रतीत होते हों। उन सबका हल प्रभु के सच्चे नाम में है। चाहे कैसा भी समय आ जाए। परमात्मा का सच्चा नाम कभी भी किसी भी स्थिति में मिटता नहीं।

''**नाम जपत निर्भय भ्या दीन्हा सदगुरू देव**''
या ऐसे समझें:—

काल पकड़ चेला किया भय के कतरे कान।
हम सत्तनाम सुमिरण करें किसको करें सलाम।।

ਨਾਮ ਬਿਨ ਭਾਵ ਕਰਮ ਨ ਛੂਟੈ

ਨਾਮ ਬਿਨ ਭਾਵ ਕਰਮ ਨ ਛੂਟੈ
ਸਾਧਸੰਗ ਅਉਰ ਨਾਮ ਭਜਨ ਬਿਨ ਕਾਲ ਨਿਰੰਤਰ ਲੂਟੈ।
ਮਲ ਸੇਤੀ ਜਉ ਮਲ ਕਉ ਧੋਵੈ, ਸੋ ਮਲ ਕੈਸੇ ਛੂਟੈ।
ਪ੍ਰੇਮ ਕਾ ਸਾਬੁਨ ਨਾਮ ਕਾ ਪਾਨੀ, ਦੁਇ ਮਿਲ ਤਾਂਤਾ ਟੂਟੈ।
ਭੇਦ ਅਭੇਦ ਭਰਮ ਕਾ ਭਾਂਡਾ, ਦਉੂੜੈ ਪਰਿ ਪਰਿ ਫੂਟੈ।
ਗੁਰਮੁਖ ਸ਼ਬਦ ਗਹੈ ਓਹ ਅੰਤਰ ਸਕਲ ਭਰਮ ਸੇ ਛੂਟੈ।
ਰਾਮ ਕਾ ਧਿਆਨ ਕਹੈ ਹੇ ਪ੍ਰਾਨੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕਾ ਮੇਂਹ ਬੂਟੈ।
ਜਨ ਦਰਿਆਵ ਅਰਪਦੇ ਆਪਾ ਜਰਾ ਸਕਲ ਤਬ ਟੂਟੈ।

ਪਿਆਰੇ ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰੇਮੀ ਜੀਓ,

ਬੜੇ ਭਾਗਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁੱਖਾ ਸਰੀਰ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਕੇ ਆਪ ਸਭ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਉਸ ਚਰਚਾ ਦਾ ਆਨੰਦ ਮਾਣ ਰਹੇ ਹੋ ਜੋ ਚਰਚਾ ਬਹੁਤ ਹੀ ਦੁਰਲੱਭ ਹੈ। ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਜਿਸ ਚਰਚਾ ਨੂੰ ਰੱਬ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਣ ਦੀ ਪੌੜੀ ਆਖਿਆ ਹੈ ਉਹ ਚਰਚਾ ਜਦੋਂ ਵੀ ਜੀਵ ਨੂੰ ਸੁਣਨ ਨੂੰ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਕੁੱਝ ਕਲਿਆਣ ਹੀ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਜਿਸ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੇ ਨਾਲ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੁਆਰਾ ਮਿਲਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲਿਆ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਨਾਮ ਹੈ ਸ਼੍ਰੀ ਦਰਿਆ ਸਾਹਿਬ। ਇੱਕ ਲਾਮਿਸਾਲ ਅਦੁੱਤੀ ਸ਼ਖਸੀਅਤ ਜਿਸ ਦੀ ਕੋਮਲਤਾ ਉਸਦੇ ਵਚਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਝਲਕਦੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਦੇ ਗਿਆਨ ਦੀ ਖੁਸਬੂ ਉਸਦੇ ਕੋਮਲ ਵਚਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

ਐਸੇ ਪਰਮਾਤਮ ਭਗਤ ਨੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਇੱਕ ਐਸੇ ਪਹਿਲੂ ਨੂੰ ਛੂਹਿਆ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਦੁੱਖਾਂ ਦੀ ਜੜ੍ਹ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਦਾ ਮਾਰਗ ਦਸਿੱਆ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਵੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਕਰਮ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰੇ ਤਾਂ ਕੁੱਝ ਸਮਝ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਦਰਿਆ ਨੇ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਭਾਵ ਕਰਮ ਦੀ । ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਸਮਝਣ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਹੈ। ਕਰਮ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਓਹ ਕੰਮ ਜੋ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਸੱਭ ਨੂੰ ਪ੍ਰਤੱਖ ਹੋ ਜਾਵੇ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਸ਼ਰੀਰ ਦੇ ਅੰਗਾਂ ਨਾਲ ਕਰਦੇ-ਕਰਦੇ ਵੇਖਿਆ ਸਮਝਿਆ ਜਾ ਸਕੇ। ਜਾਂ ਸੌਖਾ ਕਰਕੇ ਇੰਝ ਸਮਝੀਏ ਕਿ ਕਰਮ ਇੰਦਰੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਜੋ ਕਰਤੱਵ ਕੀਤੇ ਗਏ ਉਹ ਹਨ ਕਰਮ ਪਰ ਦਰਿਆ ਸਾਹਿਬ ਗੱਲ ਕਰਦੇ ਹਨ ਭਾਵ ਕਰਮ ਦੀ। ਗੱਲ ਵਿਚਾਰਣ ਯੋਗ ਹੈ। ਕਰਮ ਤਾ ਉਹ ਹੈ ਜੋ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਪਰ ਭਾਵ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਉਹ ਸਥਿਤੀ ਜਿਸ ਨੇ ਕਰਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕੀਤਾ, ਜਿਸ ਨੇ ਕਰਮ ਦਾ ਬੀ ਬੀਜਣ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਆ।

ਗੱਲ ਬਹੁਤ ਗੂੜ ਹੈ। ਦਰਿਆ ਸਾਹਿਬ ਉਹ ਹੀਰਾ ਹੈ ਜੋ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦੀ ਦੁਨਿਆ ਵਿੱਚ ਅਲੱਗ ਹੀ ਚਮਕਦਾ ਹੈ। ਜਿੱਥੇ ਸਾਰੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਰੋਗ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦੇ ਹਨ ਉੱਥੇ ਦਰਿਆ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਰੋਗ ਦੇ ਕਾਰਣ ਤੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ।

ਨਾਮ ਬਿਨ ਭਾਵ ਕਰਮ ਨ ਛੂਟੈ। ਕਰਮ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਕਦੇ ਵੀ ਬੰਦ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਕਰਮ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਸਦੈਵ ਚਲਦੀ ਹੈ। ਇਹੋ ਕਾਰਣ ਹੇ ਕਿ ਜੀਵ ਕਦੇ ਵੀ ਕਰਮ ਤੋਂ ਬਾਂਝਾ ਨਹੀਂ। ਕਦੇ-ਕਦੇ ਕੁੱਝ ਸੱਜਣ ਸੋਚਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜੇ ਉਹ ਸਭ ਕੁੱਝ ਛੱਡ ਕੇ ਸੌਂ ਜਾਣ ਜਾ ਬਹਿ ਜਾਣ ਤਾਂ ਕਰਮ ਨਹੀਂ ਹੋ ਰਿਹਾ ਪਰ ਧਿਆਨ ਦੇਣ ਯੋਗ ਗੱਲ ਹੈ ਕਿ ਸੌਣਾ ਜਾ ਬਹਿਣਾ ਵੀ ਕਰਮ ਹੀ ਹੈ। ਕਰਮ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਗੱਲ ਹੋਰ ਸਮਝਣ ਯੋਗ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਕਰਮ, ਭਾਵ ਤੋਂ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਫਲ ਨਿਰਧਾਰਣ ਵੀ ਭਾਵ ਤੋਂ ਹੀ ਹੈ। ਜੇ ਭਾਵ ਸੱਚਾ, ਸਾਤਵਿਕ, ਸ਼ੁੱਧ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਕਰਮ ਦਾ ਫਲ ਵੀ ਸਹੀ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਸੇ ਲਈ ਬੰਧਨ ਦਾ ਕਾਰਣ ਕਦੇ ਵੀ ਕਰਮ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਬੰਧਨ ਦਾ ਕਾਰਣ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਭਾਵ।

ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਦੋਸ਼ੀ ਜੋ ਕਤਲ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਲਈ ਜੱਜ ਦੇ ਪਾਸ ਲਿਆਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸੁਣਵਾਈ

ਅਪੀਲ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਵੀ ਧਿਆਨ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕਾਤਿਲ ਨੇ ਕਤਲ ਕੀਤਾ ਕਿਉਂ। ਜੇਕਰ ਉਸਦੀ ਭਾਵਨਾ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਦੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਸਜਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਜੇਕਰ ਆਤਮ ਰੱਖਿਆ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਐਸੀ ਘਟਨਾ ਵਾਪਰੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਸਮੇਂ ਦਾ ਹਾਕਿਮ ਉਸਨੂੰ ਮੁਆਫ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਕਰਮ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਮਹੱਤਵ ਕਰਮ ਦੇ ਭਾਵ ਦਾ ਹੈ। ਜੇ ਭਾਵ ਨ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਕਰਮ ਦਾ ਕੋਈ ਮਹੱਤਵ ਨਹੀਂ।

ਮਾਨਵ ਜੀਵਨ ਚ ਬੰਧਨ ਦੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਕਾਰਣ ਰਹੇ ਇਸ ਭਾਵ ਨੂੰ ਜੇਕਰ ਜਿੱਤ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਇਸ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਜਿਤਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਗੱਲ ਤੇ ਚਾਨਣਾ ਪਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਦਰਿਆ ਸਾਹਿਬ ਆਪਣੇ ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਵਰਤਨ ਕਰਦੇ ਹੋਵੇ ਆਖਦੇ ਹਨ—

“ਨਾਮ ਬਿਨ ਭਾਵ ਕਰਮ ਨ ਛੂਟੈ”

ਜੀਵਨ ਦੀ ਜਿੱਤ ਤਾਂ ਹੀ ਸੰਭਵ ਹੈ ਜੇ ਭਾਵ ਨੂੰ ਜਿੱਤ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਜੋ ਕਿ ਨਾਮ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ। ਭਾਵ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਮਨ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਫੁਰਨਾ ਹੋਣਾ।ਮਨ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਵਿਚਾਰ ਦਾ ਉਤਪੰਨ ਹੋਣਾ। ਇਹ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦਾ ਜਨਮ ਧਾਰਮਿਕ ਕੰਮਾਂ ਨਾਲ ਵੀ ਬੰਦ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਕਿਉਂਕਿ ਧਾਰਮਿਕਤਾ ਵੀ ਇੱਕ ਵਿਚਾਰ ਹੈ, ਭਾਵ ਹੈ। ਪੂਜਾ, ਕਰਮ, ਧਰਮ, ਨੇਮ, ਪਾਠ, ਜੱਗ, ਜਪ, ਦਾਨ-ਪੁੰਨ ਆਦਿ ਸਭ ਕਿਸੇ ਵਿਚਾਰ ਤੋਂ ਹੀ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਮ ਹਨ ਸੋ ਇਹਨਾਂ ਨਾਲ ਵਿਚਾਰ ਜਾਂ ਭਾਵ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਭਾਵ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਉਹੀ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜੋ ਖੁਦ ਵਿਚਾਰ ਨ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਉਹ ਹੈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ।

ਇੱਥੇ ਨਾਮ ਦਾ ਅਰਥ ਅੱਖਰ-ਸ਼ਬਦ ਆਦਿ ਨਹੀਂ। ਨਾਮ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਇੱਕ ਅਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸ਼ਬਦ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਇੱਕ ਸਹਿਜਤਾ ਹੈ। ਨਾਮ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਅਵਿਨਾਸ਼ੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਵਿੱਚ ਡੁੱਬ ਜਾਣ ਦੀ ਸਥਿਤੀ।

“ਸਾਧਸੰਗ ਓਰ ਰਾਮ ਭਜਨ ਬਿਨ ਕਾਲ ਨਿਰੰਤਰ ਲੂਟੇ।” ਜਿਸਨੂੰ ਸਮਝ ਆ ਗਈ ਉਸਦੇ ਲਈ ਨਾਮ ਜਾਂ ਰਾਮ ਭਜਨ ਅਲਗ-ਅਲਗ ਨਹੀਂ। ਮੂਰਖ ਮਤਿ ਤਾਂ ਕਹਿ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਾਡਾ ਰਾਮ ਹੋਰ ਹੈ ’ ਤੇ ਤੁਹਾਡਾ ਹੋਰ। ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਕੀ ਕਦੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਵੀ ਵੰਡਿਆ ਗਿਆ ? ਅਜਿਹੇ ਲੱਖਾਂ ਵਿਚਾਰ ਵੀ ਕਾਲ ਤੋਂ ਤੇਰੀ ਰਖਿਆ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਕਾਲ ਨਿਰੰਤਰ ਤੈਨੂੰ ਲੁੱਟ ਕੇ ਖਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਾਧਸੰਗ ਨੂੰ ਜੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਜਗ੍ਹਾ ਦੇ ਦੇਵੇਂ ਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਕਾਲ ਤੋਂ ਬਚਣ ਦਾ ਰਸਤਾ ਮਿਲ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਸਾਧੂ ਕਦੇ ਵੀ ਕਾਲ ਦਾ ਭੋਜਨ ਨਹੀਂ ਬਣਨ ਦਿੰਦਾ। ਸਾਧੂ ਸਦਾ ਹੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਸੋਝੀ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਪੂਰਨ ਗੁਰੂ ਦੇ ਲੜ ਲਗ ਕੇ ਮਾਇਆ ਦੀ ਅਤੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਹੋਸ਼ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਮਾਇਆ ਦੀ ਹੋਸ਼ ਆਈ ਤਾਂ ਕਾਲ ਦੀ ਠਗੀ ਤੋਂ ਜੀਵ ਬੱਚ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਕਾਲ ਦਾ ਪਹਿਰਾ ਉਸੇ ਤੇ ਚਲਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਮ ਭਜਨ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨਹੀਂ। ਰਾਮ ਭਜਨ-ਹਰਿ ਭਜਨ-ਪ੍ਰਭੂ ਦਾ ਸੱਚਾ ਨਾਮ-ਪੂਰਣ ਨਾਮ ਪਾਵਨ ਨਾਮ ਆਦਿ ਅਲੱਗ-ਅਲੱਗ ਨਹੀਂ। **ਰਾਮ ਭਜਨ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਜੋ ਸਭ ਵਿੱਚ ਰਮ ਰਿਹਾ ਹੋਵੇ। ਜੋ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵਸਦਾ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਭਜਨ। ਜੋ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵਾਸ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਕਿਸੇ ਇੱਕ ਧਰਮ-ਮਜ਼ਹਬ-ਜਾਤੀ-ਸੰਪਰਦਾਇ ਦਾ ਨਹੀਂ। ਉਹ ਸਰਬ ਸਾਂਝਾ ਹੈ ਅਤੇ ਬਿਨਾਂ ਸਦਗੁਰੂ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਤੋਂ ਲੱਖ ਯਤਨ ਕਰਕੇ ਵੀ ਜਾਣਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ।** ਰਾਮ-ਰਾਮ ਰਟ ਕੇ ਵੀ ਉਸਦਾ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਚਲਦਾ। ਰਾਮ-ਹਰਿ-ਓਂਮ-ਸੱਤਨਾਮ ਆਦਿ ਸ਼ਬਦ ਉਸ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਣ ਜਾਂ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਵਾਉਣ ਦੇ ਕਾਬਿਲ ਨਹੀਂ।

ਪੂਰੇ ਗੁਰੂ ਕਾ ਸੁਣ ਉਪਦੇਸ਼।
ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਨਿਕਟ ਕਰ ਪੇਖ॥

ਪੂਰੇ ਗੁਰੂ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਹੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਵਿੱਚ ਉਤਰਣ ਦਾ ਇੱਕ ਮਾਤਰ ਸਾਧਨ ਹੈ।

ਪੂਰਾ ਸਦਗੁਰੂ ਭੇਂਟਿਆ
ਪਾਇਆ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨ।
ਜਾਂ ਕੋ ਪੂਰਾ ਨਾ ਮਿਲਾ ਸੋ ਪੜਤਾ ਬੇਦ ਪੁਰਾਣ॥

ਜਦੋਂ ਪੂਰੇ ਸਦਗੁਰੂ ਨਾਲ ਭੇਂਟ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਬ੍ਰਹਮਗਿਆਨ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਨੂੰ ਪੂਰਣ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਦੀ ਛੋਹ ਨਹੀਂ ਮਿਲੀ ਉਹ

ਜੀਵ ਪਿਤਰਾਂ, ਮਸਾਣੀਆਂ, ਮੋਹਰਿਆਂ, ਦੇਵੀ-ਦੇਵਤਾ, ਭੂਤ-ਪਰੇਤਾਂ ਆਦਿ ਨੂੰ ਫੜਿਆਂ ਹੀ ਜੀਵਨ ਕੱਟ ਲੈਂਦਾ।

" ਮੁੱਲਾਂ ਦੌੜੇ ਮਸੀਤ ਤੱਕ" ਕਹਾਵਤ ਅਨੁਸਾਰ ਐਸਾ ਜੀਵ ਮੰਦਰ, ਗੁਰੂਦੁਆਰੇ, ਮਸਜਿਦਾਂ, ਚਰਚ ਆਦਿ ਤੱਕ ਹੀ ਦੌੜਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਉਸ ਜਗ੍ਹਾ ਵੀ ਪਰਮਾਤਮਾ ਲਈ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਆਪਣੀਆਂ ਮੰਗਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਹੋਸ਼ ਕਿਸੇ ਸਥਾਨ ਦੇ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਦੀ ਸੋਝੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਨਾਲ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਬਿਨਾਂ ਸਾਧਸੰਗ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ।

ਸਾਧ ਕਾ ਸੰਗ ਬੜ ਭਾਗੀ ਪਾਈਏ।
ਸਾਧ ਕੇ ਸੰਗ ਨਾਮ ਧਿਆਈਏ॥

ਸਾਧੂ ਦਾ ਸੰਗ ਮਿਲਦਾ ਬੜੇ ਭਾਗਾਂ ਨਾਲ ਹੈ। ਸਾਧੂ ਸੰਗ ਚ ਬੈਠ ਕੇ ਹੀ ਜੀਵ ਨੂੰ ਸੋਝੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਨਾਮ ਕੀ ਹੈ। ਸਾਧਸੰਗ ਭਾਗਾਂ ਦੀ ਚੀਜ਼ ਇਸ ਕਰਕੇ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਜੀਵ ਨੂੰ ਸਾਧ ਦੀ ਪਹਿਚਾਨ ਹੀ ਪਤਾ ਨਹੀਂ। ਜੀਵ ਜਾਂ ਤੇ ਉੱਕਾ ਹੀ ਵਿਰੋਧੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਧ ਕੋਈ ਹੈ ਹੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਫਿਰ ਜਣੇ-ਖਣੇ ਭਗਵੇਂ, ਚਿੱਟੇ, ਪੀਲੇ, ਨੀਲੇ ਚੋਲਾ ਧਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਸਾਧੂ ਸਮਝ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਜਦਕਿ ਸਾਧੂ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਜੋ ਸਾਧਨ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਰੱਖੇ ਜਿਸਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਣ ਦੇ ਸਾਧਨ ਦਾ ਪਤਾ ਹੋਵੇ।

ਅਵਰ ਕਾਜ ਤੇਰੈ ਕਿਤੇ ਨ ਕਾਮ।
ਮਿਲ ਸਾਧ ਸੰਗਤ ਭਜ ਕੇਵਲ ਨਾਮ॥

ਸਾਧ ਸੰਗਤ ਲਗ ਕੇ ਨਾਮ ਦਾ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ, ਨਾਮ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਬਦਾਂ-ਮੰਤਰਾਂ-ਪੂਜਾਂ-ਪਾਠਾਂ ਤੋਂ ਉੱਚੇ-ਸੱਚੇ ਨਾਮ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਧਸੰਗ ਵਿੱਚੋਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। "ਭਜ ਕੇਵਲ ਨਾਮ" ਪਰ ਧਿਆਨ ਰੱਖਣ ਯੋਗ ਕੈ ਕਿ ਸਾਧ ਸੰਗ ਚੋਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਜਾਂ ਕਹੀਏ ਕਿ ਸਿਰਫ' ਤੇ ਸਿਰਫ ਨਾਮ ਹੀ ਮਿਲਦਾ ਹੈ, ਮੰਗਾ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਨਹੀਂ।

"ਮਲ ਸੇਤੀ ਜਓ ਮਲ ਕਓ ਧੋਵੈ ਤੋ ਮਲ ਕੈਸੇ ਛੂਟੈ। "

ਜਿੰਦਗੀ ਦੀ ਇਹ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਹਰ ਕੋਈ ਦੋਹਰਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸੁਣਨ ਨੂੰ ਇਹ ਗੱਲ ਕਿਸੇ ਧੋਬੀ ਜਾਂ ਕੋਈ ਗੰਦ ਧੋਣ ਵਾਲੇ ਦੀ ਲਗਦੀ ਹੈ ਪਰ ਕੀਤਾ ਸਾਰਿਆਂ ਦੁਆਰਾ ਇਹੀ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। **ਮਲ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਧਾਰਣਾਵਾਂ ਜਾਂ ਭਾਵ ਜੋ ਹਰ ਕੋਈ ਲੈ ਕੇ ਚਲਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਗਲ ਵਿਚਾਰ ਦੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਜੀਵ ਸੋਚਦਾ ਹੈ ਕਿ ਭਾਵ ਸ਼ੁਧੀ ਨਾਲ ਹੀ ਕਲਿਆਣ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ ਪਰ ਧਿਆਨ ਰੱਖਣਾ ਕਿ ਬੰਧਨ ਦਾ ਕਾਰਣ ਹੀ ਭਾਵ ਹੈ।** ਇਹ ਕਿਵੇਂ ਸੰਭਵ ਹੈ ਕਿ ਭਾਵ ਨਾਲ ਭਾਵ ਨੂੰ ਕੱਟਿਆ ਜਾ ਸਕੇ। ਭਾਵ ਰੂਪੀ ਮੈਲ ਨੂੰ ਧੋਣ ਲਈ ਉਸ ਸਥਿਤੀ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਜੋ ਭਾਵ ਦੇ ਅਧੀਨ ਨ ਹੋਵੇ।

"ਪ੍ਰੇਮ ਕਾ ਸਾਬੁਨ ਨਾਮ ਕਾ ਪਾਨੀ।
ਦੁਈ ਮਿਲ ਤਾਂਤਾ ਟੂਟੈ।"

ਜਦੋਂ ਵੀ ਕਿਸੇ ਜਾਗਰੁਕ ਦੁਆਰਾ ਇਹ ਗੰਦਗੀ ਧੋਤੀ ਗਈ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸੀ ਪ੍ਰੇਮ ਰੂਪੀ ਸਾਬੁਣ ਅਤੇ ਨਾਮ ਦਾ ਪਾਣੀ। ਗੱਲ ਬਹੁਤ ਮਜ਼ੇਦਾਰ ਹੈ। ਭਾਵ ਕਈ ਤਰੀਕਿਆਂ ਦਾ ਹੈ ਉਹਨਾਂ ਚੋਂ ਇੱਕ ਹੈ ਪ੍ਰੇਮ ਭਾਵ। ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਦਾ ਚਿੱਤ ਦੇਵੀ-ਦੇਵਤਾ ਵਿੱਚ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਦੈਵੀ ਭਾਵ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਿੱਥੇ ਕਿਸੇ ਦਾ ਚਿੱਤ ਹੋਵੇ ਉਸ ਦਾ ਭਾਵ ਭੀ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿੱਥੇ ਕਿਸੇ ਦਾ ਮਨ ਹੋਵੇ ਉਸਦਾ ਭਾਵ ਉਸ ਜੈਸਾ ਹੀ ਹੋ ਉੱਠਦਾ ਹੈ। ਮਨ ਮਾਹੌਲ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਭਾਵ ਬਣਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਮਨ ਕਦੇ ਵੀ ਨਿਰਲੇਪ ਨਹੀਂ ਚਲਦਾ। ਮਨ ਹਮੇਸ਼ਾ ਰੰਗ ਫੜਦਾ ਹੈ।

"ਕਬਹੂੰ ਮਨ ਰੰਗ ਤਰੰਗ ਚੜੇ।
ਕਬਹੂੰ ਮਨ ਸੋਚਤ ਹੈ ਧਨ ਕੋ।
ਕਬਹੂੰ ਤਿਰਿਆ ਦੇਖ ਕੇ ਚਿੱਚ ਚਲੇ।
ਕਬਹੂੰ ਮ੍ਰਿਗ ਹੋਏ ਚਲੂੰ ਬਨ ਕੋ॥"

योग और व्यायाम में अन्तर

योग

1. प्रत्येक आसन के साथ किय जाता है।
2. श्वास लम्बा गहरा लेने व छोड़ने से पूरे शरीर को अक्सीजन मिलती है व गंदी श्वास Co_2 बाहर निकल जाती है।
3. योग से मानसिक शांति मिलती है।
4. योग से शरीर लचीला व फुर्तीला बनता है।
5. योग बच्चे, जवान, वृद्ध, बीमार, स्वस्थ, गर्भवती स्त्री, सभी व्यक्ति कर सकते हैं।
6. योग करने के बाद शरीर में स्फूर्ति व ताजगी रहती है।
7. अधिकतर योग खाली पेट व खुली हवा में किये जाते हैं।
8. योग पाचन क्रिया व उपापचय दर को विकसित करता है।
9. योग ग्रंथियों द्वारा स्त्रावित हार्मोनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

व्यायाम

1. इसमें श्वास की कोई भूमिका नहीं होती है।
2. इसमें श्वास की कोई भूमिका नहीं होने के कारण श्वास छोटा व उछला होता है। जिससे फेफड़ों को पूरा आक्सीज़न नहीं मिल पाता है।
3. ऐसा इसमें कोई प्रावधान नहीं है।
4. इसमें शरीर कठोर व सुडोल बनता है।
5. व्यायाम सिर्फ जवान व ताकतबर व्यक्ति ही कर सकते हैं।
6. व्यायाम के बाद शरीर थक जाता है। इसका 2. उद्देश्य पसीना निकालना है।
7. व्यायाम अक्सर बंद कमरों में किये जाते हैं।
8. व्यायाम कैलोरी खर्च अनुपात को बढ़ाता है।
9. व्यायाम से ग्रंथियों का कोई लेना देना नहीं है।

अनुभव वचन भंडार

1. दुख और सुख केवल दृष्टिकोण है तुम जिसे जैसा देखो तुम्हें वो वैसा ही दिखाई देगा।
2. सुमिरण का अर्थ याद करना नहीं याद में खो जाना है।
3. आनंद किसी कामना की पूर्ती में नहीं कामना हीन होने में है।
4. सदगुरू से भोग पदार्थों की चाहना हीरे से तेल चाहने के बराबर है।
5. सदगुरू मात्र ज्ञान करवाते हैं। भोग देना कार्य सदगुरू का नहीं।
6. यदि तेरे पिता—दादा थे तब तूं है यदि न होते तब तूं भी न होता। वैसे ही यदि कुछ कर्म था तब तूं आज है। आगे भी ऐसे ही जन्म मरण चलता रहेगा। ''आगे किसने देखा'' यह सोचना मूर्खों का काम है। बिना भजन के यह रीती कटती नहीं।
7. साकार निराकार के झगड़े में मत पड़ो। घड़े से मिट्टी व मिट्टी से घड़ा बनते रहते हैं।

Dhammapada

Asare1saramatino
sare2casaradassino
te saram3 nadhigacchanti
micchasankappagocara.
Saranca sarato natva
asaranca adhigacchanti
te saram adhigacchanti
sammasankappagocara.

Verse 11: They take untruth for truth; they take truth for untruth; such persons can never arrive at the truth, for they hold wrong views.

Verse 12: They take truth for truth; they take untruth for untruth; such persons arrive at the truth, for they hold right views.

The Story of Thera Sariputta

While residing at Veluvana, the Bamboo Grove monastery in Rajagaha, the Buddha uttered Verses (11) and (12) of this book, with reference to Sanjaya, a former teacher of the Chief Disciples, the Venerable Sariputta and the Venerable Moggallana (formerly Upatissa and Kolita).

Upatissa and Kolita were two youths from Upatissa and Kolita, two villages near Rajagaha. While looking at a show they realized the insubstantiality of things and they decided to search for the way to liberation. First, they approached Sanjaya. the wandering ascetic at Rajagaha, but they were not satisfied with his teachings. So they went all over Jambudipa and came back to their native place, after searching for, but not finding the true dhamma. At this point they came to an understanding that one who found the true dhamma should inform the other.

One day, Upatissa came across Thera Assaji and learned from him the substance of the dhamma. The thera uttered the verse beginning with "Ye dhamma hetuppabhava", meaning, "those phenomena which proceed from a cause". Listening to the verse, Upatissa became established in the Sotapatti Magga and Phala. Then, as promised, he went to his friend Kolita, explained to him that he, Upatissa, had attained the state of Deathlessness and repeated the verse to his friend. Kolita also become established in Sotapatti Fruition at the end of the verse. They both remembered their former teacher and so went to Sanjaya and said to him, "We have found one who could point out the Path to Deathlesseness; the Buddha has appeared in the world; the Dhamma has appeared; the Sangha has appeared... Come, let us go to the

Teacher." They had hoped that their former teacher would go along with them to the Buddha and by listening to the discourses he, too, would come to realize Magga and Phala. But Sanjaya refused.

So Upatissa and Kolita, with two hundred and fifty followers, went to the Buddha, at Veluvana. There, they were initiated and admitted into the Order as bhikkhus. Upatissa as son of Rupasari became known as Thera Sariputta; Kolita as son of Moggali became known as Thera Maha Moggallana. On the seventh day after the initiation Maha Moggallana attained Arahatship. Thera Sariputta achieved the same a fortnight after initiation. On that day, the Buddha made them his two Chief Disciples (Agga-Savaka).

The two Chief Disciples then related to the Buddha how they went to the Giragga festival, the meeting with Thera Assaji and their attainment of Sotapatti Fruition. They also told the Buddha about their former teacher Sanjaya, who refused to accompany them. Sanjaya had said, "Having been a teacher to so many pupils, for me to become his pupil would be like a jar turning into a drinking cup. Besides, only few people are wise and the majority are foolish; let the wise go to the wise Gotama, the foolish would still come to me. Go your way, my pupils."

Thus, as the Buddha pointed out, Sanjaya's false pride was preventing him from seeing truth as truth; he was seeing untruth as truth and would never arrive at the real truth.

To be Cont.....

By Post पत्रिका संबंधी विशेष सूचना

जो सज्जन पत्रिका डाक द्वारा मंगवाते हैं वे पत्रिका प्राप्त न होने पर aavpmahilpur@gmail.com पर मेल करें अथवा आश्रम के नाम एक पत्र लिखें उस पत्र के द्वारा वास्तविक त्रुटिकर्ता को खोजा जाए एवं आवश्यकतानुसार कानूनी कार्यवाही की जा सके।

सत्संग सूचनाएं

22 मई दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।

स्थान : स्वर्ण मार्कीट, नंगल रोड़, नज़दीक ट्रक युनियन गढ़शंकर

समय : प्रात: 11 से 01 तक। **प्रार्थी : श्री पंकज पाठक। मोब० 8054040012 / 8146600880**

29 मई : दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।

स्थान : रापुर रोड़ सेरी (महानपुर) तहसील विलावर जिला कठुआ।

समय : प्रात: 11 से 01 तक। **प्रार्थी : श्री नरेश कुमार। मोब० 9697210715 / 9697210717**

05 जून : दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।

स्थान : गांव व डाक सिहंवा, तह० शाहपुर नज़दीक सेंट्रल विश्वविद्यालय जिला कांगड़ा।

समय : प्रात: 11 से 01 तक। **प्रार्थी : श्री राजीव राणा। मोब० 9805767026**

अलख होम्यो क्लीनिक

सब दुख औषध प्रभू को नाम। देही में ताका विश्राम।।
जन्म-जन्म के रोग नसाहिं। श्रद्धा संग जो अनुपानाहिं।।

भगवद प्रेमी जी,

मानव जीवन में व्यक्ति का जुड़ाव सबसे ज्यादा जिससे रहा है वह है शरीर। इसकी रक्षा हेतु व्यक्ति क्या से क्या तक छोड़ देता है, क्या से क्या कर देता है। परन्तु वास्तविकता को फिर भी समझ नहीं पाता कि इस **शरीर को माध्यम बनाकर तुझे प्रभू धाम की यात्रा करनी है**। इसका सदुपयोग करते हुए, इसका स्वास्थय बनाए रखते हुए इससे प्रभु भक्ति में काम लेना है। जब दुरूपयोग से शरीर छिन्न-भिन्न, रोगी हो जाए तो व्यक्ति पूर्णत: सब कुछ गंवा बैठता है। अनेकानेक रोग आन घेरते हैं।

ऐसी स्थिति में जीव को स्वास्थय लाभ हो और उसका समय परमात्म भजन की तरफ लगे उसके लिए श्री सदगुरू देव जी कृपा रूप अलख होम्यो औषधालय का संचालन प्रारंभ हुआ है। जिसका लक्ष्य है सरल, सस्ता, सुस्पष्ट रोगोन्मूलन।

समय
सोमवार से शुक्रवार

प्रात:..... 10 से 01 बजे तक।

दोपहर..... 03 से 06 बजे तक।।

पता

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय सिद्ध झण्डी आश्रम माहिलपुर

परोपकार वचन मन काया संत स्वभाव सहज खगराया।।